आध्यात्मिक उपचार
सत्य कथा

मैं कई वर्श तक गठिया के रोग से पीड़ित रही। एक समय ऐसा भी था, जब मेरे पति मुझे पहिया कुर्सी में अस्पताल ले कर जाते थे। दर्द के कारण मैं रात रात भर चिल्लाती रहती थी। घर का काम करना तो दूर की बात, नहाने के लिए भी दूसरे की मदद लेनी पड़ती थी। अनेक मंहगे से मंहगे उपचार करने के बावजूद, रोग की त्रासदी बनी ही हुई थी। क्या करुँ? कहॉ जाउॅ? दिन रात ऐसे ही विचार मन को व्यथित करते रहते थे। ऐसे समय एक मित्र ने आध्यात्मिक उपचार के विशय में बताया। मरता क्या न करता? वाली कहावत मुझ पर पूरी तरह चरितार्थ होती थी। बिना ज्यादा विष्वास के ही मैंने इसका सहारा लेने की ठानी।

यह लिखते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि इस उपचार ने मेरी डूबती हुई नैया को किनारे लगाने में वृहद भूमिका निभाई। इस उपचार का सरल वर्णन मैं पाठकों के लिए लिख रही हूॅ। जहॉ कहीं भी आपको पीड़ा हो; जिस अंग में रोग हो; वहॉ पर हाथ रख कर; अपनी पूरी चेतना को उस स्थान पर केन्द्रित कर दीजिए। ऑखे बन्द कर के जिस किसी भी भगवान, धर्म या गुरु में आपकी आस्था हो, उनका ध्यान करिए। 'ऐसा अनुभव करिए कि आपके अन्दर प्रभु की उर्जा बह रही है। वह उर्जा आपके रोग, पीड़ा को समाप्त कर रही है। आपके अन्दर जीवनी षक्ति का संचार हो रहा है। आप उर्जावान, षक्तिवान और भक्तिवान होते जा रहे हैं।' कुछ समय तक स्थिर बैठे रहिए। कल्पना करिए कि आप पूर्णतया नीरोगी हो गए हैं। इस उपचार को दिन मे कई बार भी किया जा सकता है। पूजा के बाद करने से अथवा जब मन एकदम षान्त हो, अधिकतम लाभ का अनुभव किया जा सकता है। आज मैं बिना किसी दवा के इसी उपचार का सहारा ले कर सुख से अपना जीवन यापन कर रही हूॅ। मैं एक योग षिक्षिका होने के साथ अनेक बच्चों को गणित पढ़ाते हुए अपने घर परिवार की देखभाल भी अच्छे से कर पा रही हूॅ।

इस उपचार का प्रयोग किसी दूसरे पर भी यदि भाव के साथ किया जाए, तो आष्चर्य जनक परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। एक वृद्ध महिला पर मैंने इस उपचार का प्रयोग किया। वह कैंसर के कारण अत्यधिक पीड़ा में थीं। जब मैने उन की छाती पर हाथ रख कर महामृत्युंजय मंत्र का जप पूरी श्रद्धा और विष्वास के साथ किया तो वह तुरन्त सो गईं। अपने अनुभव की सफलता पर मेरा मन खुषी से झूम उठा।

कौन कहता है प्रभु आते नही। हम विष्वास से उनको बुलाते नही।।
उनकी करुणा जगाते नही। श्रद्धा से उनको पुकारते नही।।
उनके होने का भरोसा हम करते नही। दुःख का दामन हम छोड़ते नही।।
अपनी षक्ति को हम जगाते नही। उन की षक्ति का भरोसा हम करते नही।।

वो हमारे पास हैं। वो हमारे साथ हैं।
यकीं हम करते नहीं।।